

आदरणीय रत्ना साहेब,
सादर चरण स्पर्श,

आपको यह पत्र बहुत ही अन्धवर्धित मानसिकता में लिख रहा हूँ। पिछले कई दिनों से मुझे मानसिक शांति नहीं मिली। शायद यह पत्र लिखने से मन में जो कुछ चल रहा है उससे छुटकारा मिले। आपने भी महसूस किया होगा उस दिन मैं आपके होटल में सुबह चार बजे से बैठा था और इंतजार कर रहा था आपके उठ जाने का क्योंकि मेरे पास उस वक़्त भी हजारों बातें कहने के लिये थीं। किन्तु आपसे मिलने के बाद वह सब कहने का मौका ही नहीं मिला। आपसे कुछ दूसरी बातें भी करते रहे।

इतनी अच्छी प्रदर्शनी के बाद एक चित्रकार को प्रसन्न होना चाहिये किन्तु क्या मेरे हिस्से में सिर्फ *Exhibition* ही आया। मैं सोचता हूँ कि उस प्रदर्शनी में मेरा काम बहुत अच्छा था और मैं पूरी तरह आश्चर्य में हूँ कि आपको भी अच्छा लगा होगा। आखिरी दिन मैं वापस आया था मि. ग्रिमो से मुलाकात हुई उन्होंने मुझे बधाईयाँ भी दीं उनके भी मेरा काम बहुत अच्छा लगा उसी शाम हुसैन साहेब की प्रदर्शनी में रामकुमारजी से भी भेंट हुई दोनों ने मुझे एक ही बात कही जिसे मैंने स्वीकार भी किया कि पेरिस जाने के लिये आपको स्कालरशिप अगले साल की जायेगी इस बार बहुत अच्छा काम आपने किया है किन्तु हम चाहते हैं कि आप एक साल के लिये स्कालरशिप पाये वजाय छः महिने के लिये। यह मेरे लिये बहुत अच्छा

हैं किन्तु मैं किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता में हमेशा असफल होता हूँ यह स्पष्ट है। सबसे ताज़ा उदाहरण इसी प्रदर्शनी का है। मेरे सारे प्रयासों के बावजूद असफलता हाथ लगी। इस बार I am too young to get this scholarship. I don't know who is young and who is older. my works are young or me? any way I don't take this otherwise but I am depressed. I don't see any way to come out from this state. I am in Delhi in an artist's camp I am working but I am confused I am trying to come over. But I want your letter to help me. I am going back to Bhopal on 23rd of this month. I expect your letter there.

You don't know how eagerly I wanted to leave Bharat Bhavan for one or two years. I am sick of Swami's politics. and extreme of that filthy politics is.... long back I think in '85 I did a huge mural 30' x 12' for Bharat Bhavan anniversary. and..

अभी कुछ दिनों पहले मैं अशोकजी और स्वामीजी भारत भवन में सीढ़ियों उतर रहे थे, किसी बड़े कार्यक्रम की तैयारी चल रही थी अचानक अशोकजी बोले "स्वामी पहले जो आपने वसु मा मूरल बनाया था वही फिर से बना दीजिये"। और तीन साल बाद पहली बार उस वक़्त स्वामी ने अशोक जी को बताया कि वो मूरल अरिवलेश ने बनाया। मैं और अशोकजी दोनों को

इस बात का आश्चर्य हुआ। मुझे इसलिये कि कोई भी कलाकार अपने
 में भी किसी दूसरे कलाकार के चित्र को अपना कैसे बता
 सकता है। अशोकजी को स्वामी के इतने बोलने पर आश्चर्य हुआ
 होगा। Now you can see what we are suffering. He wants
 me to bow down and I never did I respect him
 because of my संस्कार. I have a cold war with him
 since I joined Bharat Bhavan. He delayed my promotion
 my wife's promotion. He always tries to give me lot of
 work which I always do with full zeal because
 if I am doing something I must do it with my
 full attention and love. I love to work hard. I work
 hard. Here in Delhi every ~~and~~ invited artists were
 enjoying their stay and I was working with Mr.
 O.P. Jain. He also works hard. he has a sense of
 responsibility. which I liked very much.

This time I was very much sure
 that I will get scholarship and I am out of the
 dirty things ... किन्तु किस्मत में अभी और भ्रगतना निरवा है।
 इधर प्रदर्शनी में मेरा कोई भी चित्र बिका नहीं उससे कारवा भी
 मेरा मुकसात हुआ मैं इसमें काफी पैसा लगा चुका था और
 थोड़ी सी आशा भी कि कुछ मिल जायेगा अब पता नहीं
 लोगों को पैसा वापस भी देना है। गलती मेरी ही थी जो मैंने कुछ
 ज्यादा कीमत रखी थी। जैत साहेब भी बोले थे कि आप कुछ

कीमत कम कर दीजिये जो कि मैंने बाद में की थी थी (एक और गलती)
 किन्तु कुछ भी नहीं बिकने से बहुत खराब हुआ। जब मैं आया था
 तो लार्ड्स ऑफ इंडिया की शिखा त्रिवेदी से मुलाकात हुई थीं उन्होने
 बताया कि वो लोग एक बार फिर Timeless and Exhibition करने
 वाले हैं और उसके लिये उन्होने मुझे भी आमंत्रित किया था।
 पता वगैरह वो बाद में देंगे ऐसा उन्होने कहा। इस प्रदर्शनी में
 मेरे चित्रों से वो प्रभावित थी थी। अब शायद उन्होने देखा कि
 प्रदर्शनी में एक में ही था जिसके कोई चित्र नहीं बिके तो वो
 भी डाँवाडोल होने लगी। आज ही उनसे फोन पर बातचीत हुई
 जो कि सकारात्मक नहीं थी। वे मुझसे अगले शुक्रवार फिर मिल
 रही हैं तब ठीक से पता चल जायेगा। दिलीप पद्गौवकर जी देखते
 हैं यह सब। अब पता नहीं क्या होता है मैं अगले पत्र में आपको
 विवरण कि क्या हुआ।

पता नहीं बहुत से विचार एक साथ चल रहे हैं और
 उसमें सबसे अग्र एक विचार है कि मैं कभी भी पहचाना नहीं जाऊँगा। जब
 भी कोई ऐसा मौका आता है आखिर में पता चलता है कि आपके
 बारे में प्रभासों के बावजूद असकलता आपके साथ खड़ी है। इसमें जरूर मुझसे
 कहीं न कहीं कोई चूक हो जाती है उसके लिये मैं स्वयं जिम्मेदार
 होता हूँ और मैं पुनः फिर से और अधिक विश्वास के साथ अपना
 काम शुरू करता हूँ। इस बार मुझे थोड़ी सी तकलीफ हुई जिसे मैं
 सह लूँगा और उसके लिये मुझे आपके अग्रिम पत्र की आवश्यकता
 है। मेरे काम के प्रति सबसे पहले आपने ही मेरा विश्वास दृढ़ किया था
 आपने जितना मेरे को जगाया उसके पहले किसी ने नहीं जगाया था।

5

आप ने जितना मेरे काम को जाना, देखा और किसी ने उतनी रुचि से नहीं जाना। आपके वाद पद्मसीजी ने। इसलिये मैं आपको इतना सब लिख पाने का साहस भी कर रहा हूँ। मैं पूरी तरह अन्तर्मुखी हूँ। मैं अपने बारे में कभी भी किसी से बात नहीं कर पाता आपको मैं अपने करीब पाता हूँ जिसने मुझे मेरे काम के गरीबे समझने की कोशिश की इसलिये आपसे इतना सब कह भी पा रहा हूँ आप इसे अन्यथा नहीं लें। यहाँ मैं वेत गोंग का एक पत्र का एक अंश उल्लेखित कर रहा हूँ जो उसने थियो को Courmes, Belgium, July 1880 को लिखा था।

.....Because there are two kinds of idleness, that form a great contrast. There is the man who is idle from laziness, and from lack of character, from the barrenness of his nature. You may if you like take me for such an one.

Then there is the other sort of idle man, who is idle in spite of himself, who is inwardly consumed by a great longing for action, yet does nothing because it is impossible for him to do anything, because he seems to be imprisoned in some cage, because he does not possess what he needs to make him productive, because the fatality of circumstances bring him there; such a man does not always know what he could do, but he feels by instinct: all the same I am good for something, my life has an aim after all, I know that I might be quite different man

6

How can I then be useful, of what service can I be! There is something inside of me, what can it be?

This is quite a different kind of idle man; you may if you like take me for such an one. A caged bird in spring knows quite well that he might some end; he feels well enough that there is something for him to do, but he cannot do it. What is it? He does not remember too well. Then he has some vague ideas and says to himself, "The others make their nests and lay their eggs and bring up their little ones," and so he knocks his head against the bars of the cage. But the cage remains and the bird is maddened by anguish.

"Look at the lazy animal" says another bird that passes by "he seems to be living at his ease". Yes the prisoner lives, he does not die, there are no outward signs of what passes within him; his health is good, he is more or less gay when the sun shines. But then comes the season of migration, bringing attacks of melancholia. "But he has got everything he wants," says the children that tend him in his cage, while he looks through the bars at the overcast sky, where a thunder storm is gathering, and he inwardly rebels against his fate, "I am caged, I am caged, and you tell me I do not want anything. You think I have everything I need! oh I beseech you, liberty, so that I can be a bird like other birds!"

A certain idle man resembles this idle bird. And men are often prevented by circumstances from doing things, imprisoned in I do not know what horrible, horrible, most horrible cage. There is also, I know it; the deliverance, the ready deliverance. A just or unjustly ruined reputation, poverty, inevitable circumstances, adversity that is what makes men prisoners.

one cannot always tell what it is that keeps us shut in, confines us, seems to bury us, but still one feels certain barriers, certain gates, certain walls. Is all this imagination fantasy? I do not think so. And the one asks: "My God! is it for long, is it for ever, is it for eternity?" Do you know what frees one from this captivity? it is very deep serious affection. Being Friends, being brothers, love, that is what opens the prison by supreme power, by some magic force. But without this one remain in prison. There where sympathy is renewed, life is restored.....

This is what I quoted from a book letter by Van Gogh. I don't know why but I feel like this. I don't know anything which going around and I am out of it.

मुझे लगा कि वेन गॉग ने मेरे मन की बात कही है। आदमी की निपटरी नहीं है; वह चाहता है सब कुछ और उसके लिये प्रयास भी नहीं करता। उसे सब मिलना चाहिये चाहे वो गलत तरीका अपनाये। उस दुनिया में कितने लोग हैं जो संवेदनशील हैं और अब स्थिति यह है कि संवेदनशीलता भी लोगों का फैशन हो गया है। उन्होंने संवेदना की सारी जिम्मेदारी कलाकारों पर डाल दी। अब किसी भी संवेदन मामले के लिये संवेदनशील कलाकारों से संपर्क किया जाता है। मुझे पता नहीं कि इस संवेदना में कितना रूपांतर दूसरों की संवेदनाओं का रखा जाता है। आज के कलाकार के लिये आवश्यक यह होता जा रहा है कि वह संवेदना के स्तर पर राजनीति खेलें। यह मैं किसी प्रकार भी नहीं समझ पाता हूँ कि इस राजनीति का इस कला से क्या संबंध है? क्यों है? मैंने पिछले सात सालों में जो राजनीति के कला जगत में खेल देखे उससे मुझमें धृष्टा पैदा हुई मैं नहीं सोच सकता कि मुझे आगे आने के लिये अपने ही दोस्त, भाई या सहभागी के शरीर की सीढ़ी बनानी पड़े। यह मेरे साथ किया गया। आपके द्वारा

मेरे काम की बात किये जागे के पहले तक मेरे साथ यही होता रहा। इसीलिये आप मेरे लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं कि आपने मुझे मेरे काम के प्रति और सजग किया, मेरा विश्वास और हूँ किया। आज भी बहुत से ऐसे काम जिसमें थोड़ी सी भी बदनामी होने की संभावना है वो हमारे नाम से किये जाते हैं। हमारे द्वारा बनाये गये मूरल की वाहवाही या अच्छे कामों का यश अपने स्वार्थ में डाल लिया जाता है। पता नहीं मैं क्या कर रहा हूँ। मेरे एक अच्छे सपने के टूटने का दुःख या मूर्खता का प्रमाण।

आपके पत्र का इंतजार है। मैं कुछ दिनों में इस स्थिति से उबर जाऊँगा और अपना काम फिर शुरू करूँगा। मैंने तीन बहुत अच्छे काम किये थे वे भोपाल में ही हैं। कभी दिखा सका तो?

" मैं तामर - ए - आवारा हूँ लेकिन

मेहबूब - ए - चमत तक परवाज़ नहीं "

आपका

—।।।।।।।—

(आश्विनेश)

18. OCT. 1989 N.D.